'अहिंसा' जैन और महात्मा गाँधी के संदर्भ में

डॉ0 अमृता चन्द्रा

अहिंसा शब्द हिंसा का विपरीतार्थक है। पाणिनि व्याकरण के रूधाधि और सुरादिगणीय 'अ' टाप्' प्रत्यान्त 'हिसि' धातु से निष्पन्न हिंसा का शब्दार्थ होता है– किसी प्राणी का प्राणवियोगानुकूल व्यापार (प्राण वियोगनुकूलव्यापारो हिंसा)। पूनः हिंसा शब्द में नञ तत्पुरूष समास करने पर 'हिंसा' शब्द सिद्ध होता है। अहिंसा का उच्चतम स्वरूप प्रणिमात्र में अपनी आत्मा को व्यापक रूप में देखना है। जो (साधक) सम्पूर्ण भूतो को (अपनी) आत्मा को ही देखता है, वह इस (सर्वात्म दर्शन) के कारण ही किसी से घृणाा नहीं करता तथा किसी प्राणी को भी किसी प्रकार का कष्ट नहीं देता और न स्वेतर से कष्ट दिलाने की चेष्टा करता है।